महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी

(शिक्षामन्त्रालयः, भारतसर्वकारः)

वेदविद्यामार्गः, चिन्तामणगणेशः, पो. जवासिया, उज्जैनः 456006 (म.प्र.)

वेदशोधकेन्द्रः

The type written articles/papers should be submitted on A-4 size paper (typed on one side) Addressed to: *Veda research centre, Maharshi Sandipani Rashtriya vedavidya pratishthan, Vedavidya, Chintaman Ganesh, P.O. Jawasiya, Ujjain-456006 (M.P.).* The article should be sent through e-mail preferably MS word format with PDF copy also should be sent at: *smsrvvp.2021@gmail.com*.

अनुसंधान पद्धति संबंधी नियमों के माध्यम से शोध पत्रों का प्रारूप:

(The Format of the Research papers through Research methodological rules)

1. शीर्षक (Title page)

आपके शोध पत्र के शीर्षक पृष्ठ में निम्नलिखित जानकारी शामिल है

- शोध पत्र का शीर्षक
- लेखक का नाम
- उस संस्था का नाम जिससे लेखक संबद्ध है
- पृष्ठ के शीर्ष पर हैडर पेपर शीर्षक (बड़े अक्षरों में) और पृष्ठ संख्या के साथ (यदि शीर्षक लंबा है, तो आप हेडर में इसके संक्षिप्त रूप का उपयोग कर सकते हैं।)

Format for Submission of the Research Paper, Veda Research Centre, MSRVVP, Ujjain

2. सारांश (Abstract)

आपका शोध पत्र आपके निष्कर्षों का एक सार या संक्षिप्त सारांश प्रदान करता है। प्रत्येक शोध पत्र में एक सार प्रदान करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन एक शोध पत्र में एक सारांश का उपयोग किया जाना चाहिए जिसमें एक परिकल्पना शामिल हो। एक अच्छा सार संक्षिप्त होता है - लगभग एक सौ पचास से दो सौ पचास शब्द - और एक उद्देश्य, अवैयक्तिक शैली में लिखा जाता है। आपकी लेखन आवाज यहां उतनी स्पष्ट नहीं होगी जितनी आपके शोध पत्र के मुख्य भाग में है। सारांश लिखते समय, एक न्यायसंगत दृष्टिकोण अपनाएं, और अपने शोध प्रश्न और अपने निष्कर्षों को कुछ वाक्यों में सारांशित करें।

3. भूमिका (Introduction)

एक शोध पत्र की भूमिका वह जगह है जहाँ आप पाठक के लिए अपना विषय और दृष्टिकोण निर्धारित करते हैं। इसके कई प्रमुख लक्ष्य हैं :

- **अपना विषय प्रस्तुत करें और पाठक की रुचि जगाएं।**
- **पृष्ठभूमि प्रदान करें या मौजूदा शोध को सारांशित करें।**
- **अपना खुद का दृष्टिकोण रखें।**
- **अपनी विशिष्ट शोध समस्या का विवरण दें।**
- **शोध पत्र की संरचना का एक सिंहावलोकन दें।**

भूमिका इस बात पर निर्भर करता है कि आपका पेपर मूल अनुभवजन्य शोध के परिणाम प्रस्तुत करता है या विभिन्न स्रोतों से जुड़कर तर्क का निर्माण करता है। इस लेख के पांच चरण आपको किसी भी प्रकार के शोध पत्र के लिए एक प्रभावी परिचय देने में मदद करेंगे।

3.1. शोध विषय का परिचय (Introduce your Research topic)

भूमिका का पहला काम पाठक को यह बताना है कि ? आपका विषय क्या है और यह दिलचस्प या महत्त्वपूर्ण क्यों है। यह आम तौर पर एक मजबूत उद्घाटन हुक के साथ पूरा किया जाता है। हुक एक आकर्षक प्रारंभिक वाक्य है जो आपके विषय की प्रासंगिकता को स्पष्ट रूप से बताता है। एक दिलचस्प तथ्य या आंकड़े, एक मजबूत बयान, एक प्रश्न या एक संक्षिप्त उपाख्यान के बारे में सोंचे जो पाठक को आपके विषय के बारे में सोंचने पर मजबूर कर देगा।

3.2. पृष्ठभूमि का वर्णन (Describe the background)

भूमिका का यह हिस्सा इस बात पर निर्भर करता है कि आपका शोध पत्र किस दृष्टिकोण को ले रहा है। अधिक तर्कपूर्ण शोध पत्र में, आप यहां कुछ सामान्य पृष्ठभूमि का पता लगाएंगे। अधिक अनुभवजन्य शोध पत्र में, यह पिछले शोध की समीक्षा करने और यह स्थापित करने का स्थान है कि आपका कैसे फिट बैठता है।

3.2.1.तर्कपूर्ण शोध पत्र : जानकारी की पृष्ठभूमि (Argumentative research paper: Background information)

अपने पाठक का ध्यान आकर्षित करने के बाद, थोड़ा और निर्दिष्ट करें, साथ ही संदर्भ प्रदान करें और अपने विषय को कम करें। केवल सबसे प्रासंगिक पृष्ठभूमि जानकारी प्रदान करें। बहुत गहराई से परिचय देने के अवश्यकता नहीं है; शोध पत्र के लिए अधिक पृष्ठभूमि आवश्यक है, तो यह शरीर में दिखाई दे सकती है।

3.2.2.अनुभवजन्य शोध पत्र : पूर्व शोध का वर्णन (Empirical paper: Describing previous research)

मूल शोध का वर्णन करने वाले एक पेपर के लिए, आप इसके अतिरिक्त सबसे प्रासंगिक शोध का सिंहावलोकन प्रदान करेंगे जो पहले ही आयोजित किया जा चुका है। यह एक प्रकार की लघु साहित्य समीक्षा है - आपके विषय में शोध की वर्तमान स्थिति का एक स्केच, जिसे कुछ वाक्यों तक उबाला गया है।

यह साहित्य के साथ वास्तविक जुड़ाव द्वारा सूचित किया जाना चाहिए। आपकी खोज पूरी साहित्य समीक्षा की तुलना में कम व्यापक हो सकती है, लेकिन प्रासंगिक शोध की स्पष्ट समझ आपके अपने काम को सूचित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

किए गए शोध के प्रकारों को स्थापित करके प्रारम्भ करें, और उस शोध में सीमाओं या अंतराल के साथ समाप्त करें जिसका आप जवाब देना चाहते हैं।

3.3. अनुसंधान समस्या (Research problem)

अगला कदम यह स्पष्ट करना है कि आपका अपने शोध को किस तरा युक्तिसङ्गत उपस्थापित कर सकते है और यह किस समस्या का समाधान कर सकता है।

3.3.1. तर्कपूर्ण शोधपत्र : महत्त्वपूर्ण पर जोर (Argumentative paper: Emphasize importance)

एक तर्कपूर्ण शोध पत्र में, आप केवल उस समस्या को बता सकते हैं जिस पर आप चर्चा करना चाहते हैं, और आपके तर्क के बारे में मूल या महत्त्वपूर्ण क्या है।

3.3.2. अनुभवजन्य शोध पत्र : साहित्य से सम्बन्धित (Empirical paper: Relate to the literature)

एक अनुभवजन्य शोध पत्र में, साहित्य की अपनी चर्चा के आधार पर समस्या का नेतृत्व करने का प्रयास करें। इन सवालों के संदर्भ में सोंचे:

- **आपका काम किस शोध अंतराल को भरने का इरादा रखता है?**
- **यह पिछले कार्य में किन सीमाओं को संबोधित करता है?**
- **ज्ञान में इसका क्या योगदान है?**

3.4. उद्देश्य (Specify your objective(s))

अब इस बात की बारीकियों में उतरें कि शोध पत्र में क्या पाया या व्यक्त किया जाना है। इसे फ्रेम करने का तरीका अलग-अलग होता है। एक तर्कपूर्ण शोध पत्र एक थीसिस कथन प्रस्तुत करता है, जबकि एक अनुभवजन्य शोध पत्र आम तौर पर एक शोध प्रश्न (कभी-कभी उत्तर के रूप में एक परिकल्पना के साथ) प्रस्तुत करता है।

3.4.1.शोध प्रश्न और परिकल्पना (Research question and hypothesis)

शोध प्रश्न वह प्रश्न है जिसका उत्तर आप एक अनुभवजन्य शोध पत्र में देना चाहते हैं। इस बिंदु पर कम से कम चर्चा के साथ अपने शोध प्रश्न को स्पष्ट और सीधे प्रस्तुत करें। शेष शोध पत्र को इस प्रश्न पर चर्चा और जांच के साथ लिया जाएगा; यहां आपको बस इसे व्यक्त करने की आवश्यकता है।

यदि आपके शोध में परीक्षण परिकल्पना शामिल है, तो इन्हें आपके शोध प्रश्न के साथ कहा जाना चाहिए। उन्हें आमतौर पर भूतकाल में प्रस्तुत किया जाता है, क्योंकि जब तक आप अपना शोध पत्र लिख रहे होते हैं, तब तक परिकल्पना का परीक्षण किया जा चुका होगा।

3.5. शोध पत्र का नक्शा (Map out your paper)

भूमिका का अंतिम भाग अधिकांश शेष शोध पत्र के संक्षिप्त अवलोकन के लिए समर्पित होता है। मानक वैज्ञानिक " भूमिका, तरीके, परिणाम, चर्चा" प्रारूप का उपयोग करके संरचित एक पेपर में, यह हमेशा आवश्यक नहीं होता है। लेकिन अगर आपका शोध पत्र कम अनुमानित तरीके से संरचित है, तो पाठक के लिए इसके आकार का वर्णन करना महत्त्वपूर्ण है।

4. पाठ स्वरूप (Text formatting)

सदैव आसानी से पढ़ने योग्य टाइपफेस **(एरियल यूनिकोड एमएस और टाइम न्यू रोमन)** चुनें जिसमें नियमित प्रकार की शैली इटैलिक के साथ स्पष्ट रूप से विपरीत हो और इसे एक मानक आकार (14 और 12 अंक) पर सेट करें। पाठ की पंक्तियों को सही हाशिये(Margins) पर उचित न ठहराएं; अपने वर्ड प्रोसेसर की स्वचालित हाइफ़नेशन सुविधा को बंद करें। अपने वर्ड प्रोसेसर को कोटेशन, नोट्स और उद्धृत कार्यों की सूची सहित सम्पूर्ण शोध पत्र को डबल-स्पेस करने के लिए सेट करें। एक अवधि या अन्य समापन विराम चिह्न के बाद एक स्थान छोड़ दें, जब तक कि आपका प्रशिक्षक दो रिक्त स्थान पसंद न करे।

5. संशोधन और सम्मिलन (Corrections & Insertions)

सबमिट करने से पहले अपने शोध पत्र को ध्यान से पढ़ें और ठीक करें। यदि आप अंतिम प्रति में कोई गलती पाते हैं, तो वर्ड प्रोसेसिंग फ़ाइल को फिर से खोलें, उचित संशोधन करें और सही किए गए पृष्ठ या पृष्ठों को फिर से प्रिंट करें। परिवर्तित फ़ाइल को सहेजना सुनिश्चित करें। कुछ लेखकों को **स्पेलिंग चेकर्स** और **यूसेज चेकर्स** जैसे सॉफ़्टवेयर को सावधानी के साथ प्रयोग करने में मदद मिलती है। यदि आपका प्रशिक्षक प्रिंटआउट पर संक्षिप्त सुधार की अनुमति देता है, तो लगभग और स्पष्ट रूप से स्याही में सीधे शामिल लाइनों के ऊपर लिखें, कैरेट का उपयोग करके यह इंगित करें कि वे कहाँ जाते हैं। क्या आप हाशिये का उपयोग करते हैं या उस रेखा के नीचे परिवर्तन लिखते हैं जो इससे प्रभावित होती है। यदि किसी पृष्ठ पर कई या पर्याप्त सुधार हैं, तो अपनी फ़ाइल को संशोधित करें और पृष्ठ को फिर से प्रिंट करें।

6. भाषाओं का प्रयोग (Use of the Languages)

शोध पत्र लिखने में तीन भाषाओं में से कोई भी, संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी का उपयोग किया जा सकता है।

विषय को परिभाषित (Define a Topic)

समीक्षा करने के लिए किस विषय का चयन करें? समकालीन विज्ञान में इतने सारे मुद्दे हैं कि आप सम्मेलनों में भाग लेने और साहित्य पढ़ने के लिए जीवन भर खर्च कर सकते हैं, यह सोंचकर कि क्या समीक्षा की जाए। एक तरफ, अगर आपको चुनने में कई साल लग जाते हैं, तो हो सकता है कि इस बीच कई अन्य लोगों का भी यही विचार रहा हो। दूसरी ओर, केवल एक सुविचारित विषय ही एक शानदार साहित्य समीक्षा की ओर ले जा सकता है। विषय कम से कम होना चाहिए:

- *आपके लिए रुचिकर (आदर्श रूप से, आपको अपने कार्य क्षेत्र से संबंधित हाल के पत्रों की एक श्रृंखला मिलनी चाहिए थी जिसमें एक महत्त्वपूर्ण सारांश की आवश्यकता होती है)*
- *क्षेत्र का एक महत्त्वपूर्ण पहलू (ताकि कई पाठकों की समीक्षा में रुचि हो और इसे लिखने के लिए पर्याप्त सामग्री हो)*
- *एक अच्छी तरह से परिभाषित मुद्दा (अन्यथा आप संभावित रूप से हजारों प्रकाशन शामिल कर सकते हैं, जो समीक्षा को अनुपयोगी बना देगा)।*

संभावित समीक्षाओं के लिए विचार उत्तर देने के लिए प्रमुख शोध प्रश्नों की सूची प्रदान करने वाले कागजात से आ सकते हैं, लेकिन अपमानजनक पढ़ने और चर्चाओं के दौरान गंभीर क्षणों से भी आ सकते हैं। अपना विषय चुनने के अलावा, आपको लक्षित दर्शकों का भी चयन करना चाहिए। कई मामलों में, विषय स्वचालित रूप से दर्शकों को परिभाषित करेगा, लेकिन वही विषय पड़ोसी क्षेत्रों के लिए भी रुचिकर हो सकता है।

7. फुटनोट्स और एंडनोट्स का उपयोग (Using footnotes and endnotes)

फुटनोट और एंडनोट विभिन्न परिस्थितियों में उपयोग करने में सहायक होते हैं। यहां कुछ परिदृश्य दिए गए हैं जब इस प्रकार के संदर्भ का उपयोग करना उचित प्रतीत हो सकता है:

- *जब आप अपने लेख के एक भाग में विभिन्न लेखकों द्वारा विभिन्न स्रोतों का उल्लेख कर रहे हों। इस स्थिति में, पैरेंटेटिकल संदर्भों के लिए जानकारी साझा करने के लिए फ़ुटनोट या एंडनोट का उपयोग करना एक अच्छा विचार है। यह पाठक को सभी संदर्भ सूचनाओं को पढ़ने के बजाय शोध पत्र के पाठ पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।–*

- *जब आप अतिरिक्त जानकारी साझा कर रहे होते हैं जो पेपर के दायरे में बिल्कुल फिट नहीं होती है, लेकिन पाठक के लिए फायदेमंद होती है। इस प्रकार के फ़ुटनोट और एंडनोट अनुवादों की व्याख्या करते समय, पृष्ठभूमि की जानकारी जोड़ते समय, या शोध में प्रति-उदाहरण साझा करते समय सहायक होते हैं।*

8. फ़ॉन्ट और फ़ॉन्ट आकार (Font and Font Size)

पाठक के लिए इटैलिक और नियमित फ़ॉन्ट के बीच अंतर करने में सक्षम होना महत्त्वपूर्ण है, इसलिए यदि आप **संस्कृत और हिंदी भाषाओं से भिन्न फ़ॉन्ट शैली चुनते हैं तो एरियल यूनिकोड सुश्री और अंग्रेजी भाषा का उपयोग केवल टाइम्स न्यू रोमन** का उपयोग करते हैं, सुनिश्चित करें कि बीच का अंतर दो प्रकार की शैलियाँ स्पष्ट हैं।

एरियल यूनिकोड सुश्री 14-बिंदु फ़ॉन्ट आकार का उपयोग करती हैं और **टाइम्स न्यू रोमन 12-बिंदु फ़ॉन्ट आकार** के उपयोग की अनुशंसा की जाती है क्योंकि यह कई शब्द संसाधन कार्यक्रमों के लिए डिफ़ॉल्ट आकार है।

9. मार्जिन का प्रयोग (Use Margins)

पूरे पृष्ठ के चारों ओर एक इंच के मार्जिन का प्रयोग करें। रनिंग हेड एक इंच मार्जिन में देखा जाने वाला एकमात्र आइटम होना चाहिए (रनिंग हेड्स पर अधिक जानकारी के लिए नीचे देखें)। अधिकांश वर्ड प्रोसेसिंग प्रोग्राम स्वचालित रूप से एक इंच मार्जिन का उपयोग करने के लिए डिफ़ॉल्ट होते हैं। मार्जिन आकार का पता लगाने के लिए कार्यक्रम के पेज सेटिंग्स अनुभाग की जाँच करें।

10. निष्कर्ष (Conclusion)

शोध पत्र में जो चर्चा की जा रही है उसे पूरा करें। परिचय और मुख्य पैराग्राफ में सामान्य से विशिष्ट जानकारी में जाने के बाद, निष्कर्ष को अधिक सामान्य जानकारी में वापस खींचकर शुरू करना चाहिए जो तर्क के मुख्य बिंदुओं को पुन: स्थापित करता है। निष्कर्ष कार्यवाई के लिए भी बुला सकते हैं या भविष्य के संभावित शोध का अवलोकन कर सकते हैं। निम्नलिखित रूपरेखा पेपर को समाप्त करने में मदद कर सकती है:

- अपने विषय को पुनः दोहराएं और यह महत्त्वपूर्ण क्यों है,

- अपने शोध पत्र /दावे को पुनः दोहराएं,
- विरोधी दृष्टिकोणों को संबोधित करें और समझाएं कि पाठकों को आपकी स्थिति के साथ क्यों तालमेल बिठाना चाहिए,
- कार्यवाई के लिए कॉल करें या भविष्य की शोध संभावनाओं का अवलोकन करें

11. ग्रन्थसूची (Bibliography)

एक ग्रंथ सूची, परिभाषा के अनुसार, पुस्तकों, पत्रिकाओं, या ऑनलाइन स्रोतों की एक विस्तृत सूची है जिसका उपयोग लेखक ने अपने काम पर शोध और लेखन में किया है। यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि अनुसंधान चरण के दौरान उपयोग किए जाने वाले प्रत्येक स्रोत की पूरी सूची को संदर्भित किया जाता है। अधिक विशेष रूप से, एक ग्रंथ सूची में शामिल होना चाहिए:

प्राथमिक तथ्य (Primary Source)

- पहली पुस्तक का नाम इटैलिक शैली के रूप में और उसके बाद एक अवधि और दो स्थान
- सम्पादक, अनुवादक या संकलक का नाम जिसके बाद अल्पविराम लगा हो।
- वॉल्यूम की संख्या उसके बाद एक अवधि
- प्रकाशन का स्थान और उसके बाद एक कोलन।
- प्रकाशक का नाम और उसके बाद अल्पविराम।
- प्रकाशन का वर्ष उसके बाद एक अवधि।

उदाहरण : *ऋग्वेद.* सम्पा. रामगोविन्दशास्त्री, भाग. 1, वाणारसी : चौखम्वा विद्याभवन, 2007.

11.1. द्वितीयक स्रोत और आधुनिक स्रोत (Secondary Source & Modern Source)

- लेखक, या लेखकों का नाम (अंतिम नाम पहले) उसके बाद एक अवधि और दो रिक्त स्थान)
- स्रोत सामग्री का पूरा शीर्षक (स्रोत हमेशा इटैलिक शैली) और दो स्थान।
  - सम्पादक, अनुवादक या संकलक का नाम जिसके बाद अल्पविराम होता है
  - वॉल्यूम की संख्या उसके बाद एक अवधि
  - प्रकाशक का नाम और उसके बाद अल्पविराम।
  - प्रकाशन का वर्ष उसके बाद एक अवधि।

उदाहरण : उपाध्याय, वलदेव. *संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास,* भाग.1, लखनऊ : उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, 1993.

11.2. पत्रिका (**Journal**)

- लेखक, या लेखकों का नाम (अंतिम नाम पहले) उसके बाद एक अवधि और दो रिक्त स्थान।
- लेख का शीर्षक, उद्धरण चिह्नों के साथ एक अवधि और दो रिक्त स्थान के बाद संलग्न है।
- जर्नल या पत्रिका के शीर्षक की इटैलिक शैली।
- वॉल्यूम संख्या
- प्रकाशन की तारीख, कोष्ठक के भीतर संलग्न है, उसके बाद एक कोलन है।
- पूरे लेख का समावेशी पृष्ठांकन, उसके बाद एक अवधि।

11.3. मुद्रित स्रोतों के लिए यह जानकारी दस्तावेज़ (Document This Info for Printed Sources)

- लेखक का पूरा नाम
- प्रकाशन का शीर्षक (और लेख शीर्षक भी अगर यह एक पत्रिका या विश्वकोश है)
- प्रकाशन की तारीख
- प्रकाशक का नाम
- वॉल्यूम और पेज नंबर

11.4. वेब साइटों के लिए यह जानकारी दस्तावेज़ (Document This Info for Web Sites)

- लेखक का नाम
- संपादक का नाम
- वेबसाइट पोस्ट करने वाली कंपनी का नाम
- यूआरएल या वेब पता

शोध पत्र का नमूना

अपने काम को सरल बनाने के लिए, आप इस प्रारूप का उपयोग कर सकते है और अपने स्वयं के शोध पत्र संरचना का विवरण जोड़ सकते है। ध्यान दें कि शोध के प्रकार और अनुरोधित लेखन शैली के आधार पर इस प्रारूप को बदलने की आवश्यकता हो सकती है। निम्नलिखित एक शोध पत्र की रूपरेखा का एक उदाहरण है :

(शोध पत्र का शीर्षक)

लेखक का नाम

1. **शोधसार**: एक आछा सार संक्षिप्त होता है – लगभग 150 से 250 शब्द।
2. **परिचय (2-3 पैराग्राफ)**
   - A. कहानी, काफी, प्रश्न, कुछ रुचिकर
   - B. समस्या का विवरण (आपका 'क्यों' प्रश्न)
   - C. समस्या का इतिहास
3. **1st सेक्शन (4-6 पैराग्राफ)**
   - A. समस्या की सीमा
     1. क्या हुआ है?
     २. हमें क्यों चिंतित होना चाहिए?
   - **B. कौन प्रभावित है/वे कैसे प्रभावित हैं**
     1. उदाहरण
     2. कहानियां
     3. तथ्य

4. सेक्शन दो (3-4 पैराग्राफ)

A. कारण/प्रभाव : इस समस्या के कारण ऐसा हुआ है……

B. समस्या के परिणाम: यदि हम इसका समाधान नहीं करते हैं, तो यह होगा….

5. सेक्शन तीन (1-3 पैराग्राफ)

A. संभावित समाधान

1. क्या काम करेगा?
2. क्या काम नहीं करेगा?
3. संभावित विरोध

6. उपसंहार

क्या काम किया गया है?

आपको क्या मिला?

शोध पत्र के कारण संस्कृत साहित्य में कौन सा स्थान भर गया है?

पदनाम और संस्थान का नाम
ईमेल आईडी और संपर्क नंबर

6. ग्रन्थसूची

a.मुख्य स्रोत

Example: *Rigveda*. Ed. Ramagovinda Sastri, Vol. 1, Vanarasi : Chukhamba Vidyabhavan, 2007.

b. द्वितीयक & आधुनिक स्रोत

Example: उपाध्याय, वलदेव. *संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास*, भाग.1, लखनऊ : उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, 1993।